Original Research Paper History

मीडिया व अजमेर के गरीब नवाज का उर्स

बनवारी लाल यादव शोधार्थी, इतिहास व संस्कृति विभाग, राज.वि.वि., जयपुर

KEYWORDS :

मीडिया एक व्यापक अवधारणा है जो इस देश में छोटी नृत्य–नाटिकाओं से आई। एक नृत्य नाटिका हमारे सांस्कृतिक संदेश पूरे क्षेत्र में पहुँचाती है। आधुनिक मास मीडिया की अवधारणा पश्चिम की देन है। मीडिया के दोनों ही प्रकार (इलेक्ट्रॉनिक व प्रिंट) आज जनता की संस्कृति संदेश से जुड़े हैं। मीडिया ऐसा संकल्परूपी बीज है जिसे जनता सिंचती है और वह वटवृक्ष बनकर छाया भी जनता को देता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि मीडिया हमारी सोच को बदलने का काम करता है। मीडिया को मधुमक्खी की तरह होना चाहिए क्योंकि मधुमक्खी जैसी मीडिया/पत्रकारिता ने दुनिया को मधु के साथ–साथ गलती करने पर डंक भी मारा है।1

मीडिया जनता व सरकार बीज सेतु है। वह जनता की बात सरकार तक पहुँचाता है वह सरकार की नीतियों को जनता तक पहुँचाता है। हमने सगर्व कहना शुरु किया कि मीडिया चौथा पाया है। क्या जनता पांचवा पाया है? लोकतन्त्र किसके लिए है और क्या संभव है कि मिडिया के बिना लोकतन्त्र जिंदा रह सकता है।''2 मीडिया संस्कृति ने गरीबनवाज के उर्स को नवीन ऊँचाइयों पर पहुँचाया है तथा मध्यकाल से वर्तमान काल तक इसको अपने कवरेज में प्रमुख जगह दी है।

सूफी परम्परा में उर्स की रस्में

1. झंडा चढानाः– सूफी संत हजरत ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती के 802वें उर्स पर झंडा बुलंद दरवाजे पर चढाया गया। उसे साथ ही उर्स की अनौपचारिक शुरूआत होता है। उर्स की विधिवत शुरूआत रनब महीने का चांद दिखने पर होगी। झंडे को भीलवाड़ा के गोरी परिवार द्वारा लाया जाता है। जन्नती दरवाजा उर्स के चौथे दिन खोला जाता है। छः दिन तक जायदीन के लिए यह दरवाजा खुला रहेगा। इस्लामी 6ठे माह जमा दी उल आखिर की 25 तारीख को ''अस्र'' की नमाज के पश्चात दरगाह के दफ्तर से एक झण्डा जुलूस की शक्स में लाया जाता है और दरगाह के बुलन्द दरवाजे पर रोप दिया जाता है। यह वार्षिक उर्स के प्रारंभ होने का संकेत होता है।3

2. जन्नती दरवाजा खोलना – चांद दिखने के बाद ही ख्वाजा साहब के 802 वे उर्स की धार्मिक रस्में शुरू हो जायेंगी। चांद दिखने पर बड़े पीर की पहाडी से तोप दागी जाती है और दरगाह परिसर में शामियाना बनाकर चांद की घोषणा की जाती है। उर्स की पहली महफिल रात 11 बजे व पहले गुमल की रस्म रात्रि 1 बजे अदा की जाती है। परम्परा के अनुसार दरगाह स्थित जन्नती दरवाजा तड़के ही खोल दिया जाता है। यह दरवाजा साल में बारबार विशेष मौकों पर खोला जाता है। इसी माह की 29 तारीख को जन्नती दरवाजा प्रातः की नमाज के बाद खोल दिया जाता है। जो निरन्तर छः दिन तक खुला रहता है। यह दरवाजा अगले माह रजब महीने की छः को कुल की रस्म के साथ बन्द कर दिया जाता है।

3. संदल की रस्म – ख्वाजा की दरगाह मजार शरीफ पर साल भर चढाया जाने वाला संदल उतारने की रस्म अदा की जाती है। यह संदल जायरीन में बांटा जाता है। इस समय विभिन्न जोड़ों के निकाह भी करवाये जाते हैं। उर्स के दिनों में दरगाह में रोशनी 'मगरिब' अर्थात् शाम की नमाज से 20 मिनिट पहले 'अन्दरूनी' आस्ताना शरीफ हुआ करता है लेकिन 25 जमादी उल आखिर से 5 रजब तक बेगमी दालान में होता है।4

4. समाधि की सेवा खादिम (सेवाकार) ही करते हैं। सुबह सेवा प्रातः की नमाज के पहले और दिन गुरुवार के अलावा सदैव 3 बजे हुआ करती है। जुमेरात अर्थात् गुरुवार को 2:30 बजे की जाती है। 25 जमादी उल आखिर से इसका समय बदल कर शाम की नमाज के पश्चात् कर दिया जाता है। जो 5 रजब तक रहता है।

5. कुल की रस्म – चारो तरफ गुलाव जल और केवड़े की महक, गूँजते सूफियाना कलाम और बजते शादियाने, कही जायरीन का बढ़ता रेला, कहीं हारिरी देने की होड़ तो कहीं दुआओं व अदावतों का दौर। गरीब नवाज के 802 वें उर्स में कुल की रस्म के दौरान यह नजारा रहा। रात से ही कुल के छेटें दिये जाते हैं दोपहर बाद यह रस्म अदा की जाती है। सभी रस्मों के बाद शाम को आस्ताना शरीफ को खोला जाता है जिसमें जायरीन बड़े उत्साह से भाग लेते हैं। इन रस्मों के बाद दरगाह स्थित जन्नती दरवाजा बंदकर दिया जाता है। जियारत के बाद जायरीनों के लौटने का सिलसिला शुरू हो जाता है।

6. रजब (इस्लाम का 7वाँ महिना) को 'कुल' की रस्म के साथ उर्स सम्पन्न होता है।5

ख्वाजा के गायी जाने वाली कव्वालियां

कव्वाली किसी महापुरुष की स्मृति गाये जाने वाली स्तुति/भजन/हस्द/मानिख्वात है जो ताली व बिना किसी यंत्र की सहायता से गायी जाती है। स्वरूपतया इस वर्षा ऋतु में गया जाता है पर तीन अवसरों पर विशेष– 1. उर्स का संमा (रस्म का छठादिन) 2. ख्वाजा फापरूद्दीन अहमद गरदेगी (26 रजब) उर्स, 3. ख्वाजा उस्मान हरवानी का उर्स (6 सव्वल)।6

हजारो बादशाह आए, हजारो सल्तनत बदली

न बदली न बदलेगी हुकुमत मेरे ख्वाजा की।
मेरा ख्वाजा बादशाह मुझे कोई गम नहीं–––
ख्वाजा मुइनुदिद्न तो मुर्शीद है हमारे।
लाखों मुरीद पलते हैं ख्वाजा के सहारे।।
मेरे ख्वाजा बादशाह––
जो बिगड़ी बन नहीं सकती, उसे ख्वाजा बनाते हैं,
पूर्व को देना पड़ता है, जिसे ख्वाजा दिलाते हैं,
मेरा ख्वाजा बादशाह मुझे कोई गम नहीं
ख्वाजा की बादशाह भी क्या बेनजीर है,
हर जर्रा उनकी रोशनी का जमीर है।
हिन्दूव्वली की शान को देखे जरा कोई,
अकबर भी मेरे ख्वाजा की दरगाह का फकीर है।
मेरा ख्वाजा बादशाह––
जहाँ देखो जिधर देखो उजाला ही उजाला है।
जमाने में लिशितिया का बोलबाला है।
मेरा ख्वाजा बादशाह––
होठों पर मेरे शिकवा ए रजो आलम नहीं,
कैसे कहूं मेरे पे निगाहे करम नहीं।
ऐसा शख्स नहीं इस सरजमीन पर,
ख्वाजा मुइनुद्दीन से अदा सनम नहीं।
मेरा ख्वाजा––
आंगन में तेरे फूल का फनादा खिलेगा।
दुनिया भी मिलेगी, तुझे रुतबा भी मिलेगा।
मेरा ख्वाजा बादशाह––
मिलता है वहां हैदर हरि का सदका
मिलता है वहां अहमद मुफ्तार का सदका
मेरा ख्वाजा बादशाह––
दिलबर नहीं, ऐसा कोई दिलदार नहीं है।
जो प्यार यहां हो, वो प्यार कहीं नहीं है
दरबार तो भारत में बहुत देखे हैं मैने
लेकिन कहीं ऐसा कोई दरबार नहीं है,
मेरा ख्वाजा बादशाह––
मेरा ख्वाजा बादशाह––7

चूंकि मीडिया एक व्यापक अवधारणा है। जिसमे विभिन्न पत्र पत्रिकायें पुस्तके तथा सभी प्रकाशित दस्तावेजो को शामिल किया जाता है। उत्तर मुगलकालीन पत्रो से ज्ञात होता है कि उर्स व दैनिक खर्च हेतु तत्कालीन शासको द्वारा दरगाह प्रबन्धन को वित्तीय अनुदान उपलब्ध करवाया गया। शिवाजी के पौत्र राजाशाह के वकालत नामा से ज्ञात होता है कि सैय्यद मुराद खादीम को पेशवा द्वारा ख्वाजा साहिब का वकील नियुक्त किया और सैय्यद मुराद के स्वयं व परिवार के लिए प्रार्थना करने हेतु आग्रह किया। इस कार्य हेतु 1000/– रूपये प्रतिवर्ष नजर और नियाज (फुतुह) तय किया गया।8 बाजीराव के वकालतनामा से ज्ञात होता है पूर्वजों की परम्परा के अनुरूप पेशवा बाजीराव प्रथम ने सैय्यद मुराद खादीम को ख्वाजा साहिब दरगाह का वकील नियुक्त किया और मराठा सरदार व उसके परिवार हेतु जीवनपर्यन्त प्रार्थना करने की गुजारिश की।9 राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर की दरगाह फाईलो से ज्ञात होता है कि विभिन्न शासको द्वारा अपने अपने समय मे दरगाह खर्च हेतु विभिन्न भौमियो को सनद व पट्टे जारी किये गये। सन् 1819/20 में जारी सूची में कुल 113 भौमियो के नाम दर्ज हैं जिनमें 22 मुगलों द्वारा, 23 राजपूत, मराठों द्वारा व 68 अनामी है जो अधिकांश दरगाह पदाधिकारियों के नाम जारी किये गये हैं।10 वर्तमान के तकनीकि प्रधान युग में हम विभिन्न आधुनिक तकनीको से जुडे हुये है। अतः अपने जीवन में हम जिम्मेदार पूर्ण मीडिया को जगह दे जो मोबाइल हो इंटरनेट हो या टी.वी. हो। इसलिए हम सब अंदर से एक मीडिया बनकर काम करे। एक साथ जुडकर राष्ट्रहित में संवाद करना सिखे तो हम सब मीडिया बन जायेंगे।11 हम मन से बात करेंगे तो एक दूसरे के दिल को छु पायेंगे। मैं समझता हूँ कि हम

सब मिलकर बहुत अच्छा काम करेंगे क्योंकि युवा पीढ़ी में इतना जोश है, उनके बड़े सपने हैं। हमें उनके सपनों को पूरा करना है। यही सपना इस देश का निर्माण करेगा। ऐसी मेरी मीडिया से आशा है।''

1. राजस्थान पत्रिका, 7 मई 2014, पृष्ठ 7
2. वही, पृष्ठ 7
3. राजस्थान पत्रिकाए 24 अप्रेल 2014
4. दैनिक भास्कर, रसरंग, 27 अप्रेल 2014, अंक 127
5. उर्दू साहित्य का इतिहास, सैयद एहतिशाम हुसैन, अलीगढ़ 1954 ई., पृ. 341
6. द चिश्ती श्रार्दन आफ अजमेर लियाकत मोइनी, पब्लिकेशन स्कीम जयपुर 2004 पेज, 220
7. डी.डी.न्यूज 26 अगस्त 2014
8. मुराद सौसाद क्लेक्शन, अजमेर, रजि. न.1 डाक्यूमेन्ट न.1, जुलाई 1706
9. मुराद मौसाद कलेक्शन, अजमेर, रजि. न.1 डाक्यूमेन्ट न.6, 1736
10. दरगाह वक्फ (1819/1820), फाईल न. 579/382, राज. स्टेट आर्काइव्ज, बीकानेर
11. राजस्थान पत्रिका, 7 मई 2014, पृष्ठ 16
12. वही पृष्ठ, 16